अध्याय 8: लखनवी अंदाज

विषय-सूची 4 प्रश्नावली · 7 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1	प्रश्न-अभ्यास	4 प्रश्न
प्रश्नावली 8.2	रचना और अभिव्यक्ति	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.3	भाषा-अध्ययन	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.4	शब्द-संपदा	1 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1 — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

हल

लेखक को नवाब साहब की निम्नलिखित हाव-भावों से यह महसूस हुआ कि वे बातचीत के लिए उत्सुक नहीं हैं—
1. जब लेखक सेकंड क्लास के डिब्बे में चढ़े तो नवाब साहब की आँखों में 'एकांत चितन में विघ्न का असंतोष' दिखाई दिया। अर्थात् उनके भाव में स्पष्ट खीझ थी।
2. नवाब साहब ने लेखक के प्रति 'संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया' — वे चुप रहे, बात नहीं की।
3. लेखक ने अनुमान लगाया कि नवाब साहब शायद यह नहीं चाहते थे कि शहर का कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करते देखे, इसलिए वे असहज और संकुचित थे।
4. नवाब साहब ने बातचीत के बजाय खिड़की से बाहर देखते रहे और स्थिति पर गौर करते रहे — यह उनकी उदासीनता का प्रमाण था।

उत्तर: नवाब साहब की आँखों में एकांत चितन में विघ्न का असंतोष, संगति के लिए उत्साह न दिखाना, और खिड़की से बाहर देखते रहना — इन हाव-भावों से लेखक को महसूस हुआ कि वे बातचीत के लिए उत्सुक नहीं हैं।

प्रश्न 2

नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंततः सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

हल

नवाब साहब ने ऐसा करने के संभावित कारण—
नवाब साहब लखनऊ की सामंती नवाबी नस्ल के प्रतिनिधि हैं। वे एकांत में खीरा खाने के शौक से खरीद लाए थे। परंतु जब लेखक डिब्बे में आ गए तो नवाब साहब असहज हो गए — एक सफेदपोश के सामने खीरा जैसी 'अपदार्थ' चीज़ खाना उन्हें अपनी रईसी के विरुद्ध लगा।
उन्होंने खीरे की फाँकों को बड़े करीने से काटा, नमक-मिर्च छिड़की — यह सब दिखावे और नवाबी तैयारी के लिए

था। अंत में उन्होंने खीरे को खाने की बजाय केवल सूँघकर खिड़की से बाहर फेंक दिया। इससे वे यह दिखाना चाहते थे कि वे 'खानदानी रईस' हैं जो खीरे की सुगंध से ही तृप्त हो जाते हैं — खाने की 'मामूली जरूरत' उन्हें नहीं।

स्वभाव की विशेषताएँ—

यह व्यवहार नवाब साहब के दिखावटी, आडंबरप्रिय और पतनशील सामंती स्वभाव को इंगित करता है। वे वास्तविकता से बेखबर, बनावटी जीवन-शैली के आदी हैं। अपनी 'नवाबी' प्रतिष्ठा बचाने के लिए वे अपनी वास्तविक भूख और जरूरत को भी नकारते हैं। यह पतनशील सामंती वर्ग का प्रतीकात्मक चित्रण है।

उत्तर: नवाब साहब ने सफेदपोश के सामने खीरा खाना अपनी नवाबी शान के विरुद्ध समझा और केवल सूँघकर फेंक दिया। यह उनके दिखावटी, आडंबरप्रिय और पतनशील सामंती स्वभाव को इंगित करता है।

प्रश्न 3

बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

हल

यशपाल का यह कथन व्यंग्यात्मक है। वे 'नयी कहानी' आंदोलन के उन लेखकों पर व्यंग्य कर रहे हैं जो बिना ठोस कथ्य के — केवल लेखक की इच्छामात्र से — कहानी लिखने का दावा करते थे।

कहानी के लिए आवश्यक तत्त्व—

वास्तव में किसी भी कहानी के लिए विचार, घटना और पात्र अनिवार्य तत्त्व हैं। विचार के बिना कहानी में संदेश नहीं होता; घटना के बिना कथा-प्रवाह नहीं बनता; पात्र के बिना कहानी का कोई आधार नहीं होता।

यशपाल की सहमति की सीमा—

हम यशपाल के इस विचार से पूरी तरह सहमत हैं कि बिना इन तत्त्वों के कहानी नहीं बन सकती। 'लखनवी अंदाज' स्वयं इसका प्रमाण है — इसमें एक स्पष्ट पात्र (नवाब साहब), एक घटना (खीरे का प्रसंग) और एक सशक्त व्यंग्यात्मक विचार है। यही इसे एक सफल रचना बनाता है।

नवाब साहब के खीरे को सूँघकर तृप्त होने की कल्पना से डकार आने के उदाहरण के माध्यम से यशपाल यह सिद्ध करते हैं कि जैसे केवल सुगंध से पेट नहीं भरता, वैसे ही केवल इच्छा से कहानी नहीं बनती।

उत्तर: बिना विचार, घटना और पात्रों के कहानी नहीं बन सकती — यशपाल के इस विचार से हम पूरी तरह सहमत हैं। ये तीनों कहानी के अनिवार्य तत्त्व हैं; इनके अभाव में कहानी केवल एक खोखला ढाँचा होगी।

प्रश्न 4

आप इस निबंध को और क्या नाम देना चाहेंगे?

हल

यह प्रश्न व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का है; विभिन्न संभावित नाम दिए जा सकते हैं—

1. 'नवाबी आडंबर' — क्योंकि पूरी रचना नवाब साहब के दिखावटी व्यवहार पर केंद्रित है।
2. 'खीरे का रसास्वादन' — क्योंकि खीरे का प्रसंग पूरी कहानी का केंद्र है।
3. 'पतनशील सामंती संस्कृति' — क्योंकि यह रचना उस संस्कृति का व्यंग्यात्मक चित्रण है।

4. 'बनावटी जीवन-शैली' — क्योंकि नवाब साहब का पूरा आचरण बनावटीपन का उदाहरण है।
5. 'ज्ञान-चक्षु' — क्योंकि कहानी के अंत में लेखक के ज्ञान-चक्षु खुलते हैं।

उत्तर: 'नवाबी आडंबर' — यह नाम उपयुक्त होगा क्योंकि पूरी रचना नवाब साहब के दिखावटी व्यवहार और पतनशील सामंती जीवन-शैली का व्यंग्यात्मक चित्रण है।

प्रश्नावली 8.2 — रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 5

(क) नवाब साहब द्वारा खीरा खाने की तैयारी करने का एक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।

हल

नवाब साहब द्वारा खीरा तैयार करने की पूरी प्रक्रिया—

1. नवाब साहब ने पहले खीरों के नीचे रखा तौलिया झाड़कर सामने बिछा लिया।
2. सीट के नीचे से लोटा उठाकर खिड़की से बाहर दोनों खीरों को धोया और तौलिए से पोंछ लिया।
3. जेब से चाकू निकाला और दोनों खीरों के सिर काटे।
4. खीरों को गोदकर झाग निकाला (यह लखनऊ की परंपरागत विधि है)।
5. बहुत एहतियात से खीरों को छीलकर फाँकों को करीने से तौलिए पर सजाते गए।
6. खीरे की फाँकों पर जीरा-मिला नमक और लाल मिर्च की सुर्खी बुरक दी।
7. अंत में — फाँक उठाकर होंठों तक ले गए, सूँघा, स्वाद की कल्पना में पलकें मुँद गईं, मुँह में भर आए पानी का घूँट उतरा — और फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। इसी प्रकार सभी फाँकें एक-एक कर खिड़की से बाहर फेंकते गए।
8. अंत में तौलिए से हाथ और होंठ पोंछकर गर्व से लेखक की ओर देखा।

उत्तर: नवाब साहब ने खीरे धोए, पोंछे, सिर काटे, झाग निकाला, छीलकर फाँकें सजाईं, नमक-मिर्च बुरकी — और अंत में खाने की बजाय केवल सूँघकर एक-एक फाँक खिड़की से बाहर फेंक दी।

प्रश्नावली 8.3 — भाषा-अध्ययन

प्रश्न 8

निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियापद छाँटकर क्रिया-भेद भी लिखिए— (क) एक सफेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे। (ख) नवाब साहब ने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया। (ग) ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। (घ) अकेले सफर का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे। (ङ) दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला। (च) नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक-मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की ओर देखा। (छ) नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए। (ज) जेब से चाकू निकाला।

हल

(क) क्रियापद: बैठे थे — क्रिया-भेद: अकर्मक क्रिया (सकर्मक नहीं; 'बैठना' में कोई कर्म नहीं)।
(ख) क्रियापद: दिखाया — क्रिया-भेद: सकर्मक क्रिया (कर्म = उत्साह)।
(ग) क्रियापद: करते रहने की आदत है — क्रिया-भेद: सकर्मक क्रिया (संयुक्त क्रिया; कर्म = कल्पना — 'कल्पना करते रहना' में 'कल्पना' कर्म है)।
(घ) क्रियापद: खरीदे होंगे — क्रिया-भेद: सकर्मक क्रिया (कर्म = खीरे)।
(ङ) क्रियापद: काटे, निकाला — क्रिया-भेद: दोनों सकर्मक क्रियाएँ (कर्म क्रमशः = सिर, झाग)।
(च) क्रियापद: देखा — क्रिया-भेद: सकर्मक क्रिया (देखना; 'खीरे की फाँकों की ओर देखा' — फाँकें कर्म)।
(छ) क्रियापद: लेट गए — क्रिया-भेद: अकर्मक क्रिया (संयुक्त क्रिया; लेटना अकर्मक है)।
(ज) क्रियापद: निकाला — क्रिया-भेद: सकर्मक क्रिया (कर्म = चाकू)।

उत्तर: (क) बैठे थे — अकर्मक; (ख) दिखाया — सकर्मक; (ग) करते रहने की आदत है — सकर्मक; (घ) खरीदे होंगे — सकर्मक; (ङ) काटे, निकाला — सकर्मक; (च) देखा — सकर्मक; (छ) लेट गए — अकर्मक; (ज) निकाला — सकर्मक।

प्रश्नावली 8.4 — शब्द-संपदा

प्रश्न 1

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ मिलाइए— शब्द: मुफस्सिल, सफेदपोश, किफायत, आदाब अर्ज, गुमान, एहतियात, बुरक देना, स्फुरण, प्लावित, पनियाती, मेदा, तसलीम, सिर खम करना, तहजीब, नफासत, नजाकत, नफीस, एब्स्ट्रैक्ट, सकील अर्थ: केंद्रस्थ नगर के इर्द-गिर्द के स्थान, भद्र व्यक्ति, मितव्यता/समझदारी से उपयोग करना, अभिवादन का एक ढंग, भ्रम, सावधानी, छिड़क देना, फड़कना/हिलना, पानी भर जाना, रसीली, अमाशय, सम्मान में, सिर झुकाना, शिष्टता, स्वच्छता, कोमलता, बढ़िया, सूक्ष्म/जिसका भौतिक अस्तित्व न हो/अमूर्त, आसानी से न पचने वाला

हल

मुफस्सिल — केंद्रस्थ नगर के इर्द-गिर्द के स्थान
सफेदपोश — भद्र व्यक्ति
किफायत — मितव्यता, समझदारी से उपयोग करना
आदाब अर्ज — अभिवादन का एक ढंग
गुमान — भ्रम
एहतियात — सावधानी
बुरक देना — छिड़क देना
स्फुरण — फड़कना, हिलना
प्लावित — पानी भर जाना
पनियाती — रसीली
मेदा — अमाशय
तसलीम — सम्मान में
सिर खम करना — सिर झुकाना
तहजीब — शिष्टता
नफासत — स्वच्छता
नजाकत — कोमलता
नफीस — बढ़िया
एब्स्ट्रैक्ट — सूक्ष्म, जिसका भौतिक अस्तित्व न हो, अमूर्त
सकील — आसानी से न पचने वाला

उत्तर: सभी 19 शब्दों के अर्थ उनके सामने दिए गए हैं — मुफस्सिल=केंद्र के इर्द-गिर्द के स्थान; सफेदपोश=भद्र व्यक्ति; किफायत=मितव्यता; आदाब अर्ज=अभिवादन; गुमान=भ्रम; एहतियात=सावधानी; बुरक देना=छिड़कना; स्फुरण=फड़कना; प्लावित=पानी भरना; पनियाती=रसीली; मेदा=अमाशय; तसलीम=सम्मान में; सिर खम करना=सिर झुकाना; तहजीब=शिष्टता; नफासत=स्वच्छता; नजाकत=कोमलता; नफीस=बढ़िया; एब्स्ट्रैक्ट=अमूर्त; सकील=न पचने वाला।